'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 11 | 19 अगस्त, 2019 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

देश भर में उत्साह से मनाई

पूज्य नारायणसिंह जी की जयंती

30 जुलाई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के आदर्श स्वयंसेवक तथा तृतीय संघप्रमुख पूज्य नारायणसिंह जी रेड़ा की 79वीं जयन्ती थी। उनकी जयन्ती के उपलक्ष्य में देशभर में स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा उत्साह पूर्वक शाखाओं प्रान्त व संभाग स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। जयपुर में केंद्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में समारोह आयोजित हुआ जिसमें शहर में रहने वाले समाजबंधु सपरिवार सम्मिलित हुए।

गुजरात में भी विभिन्न स्थानों पर जयन्ती कार्यक्रम आयोजित किए गए। अहमदाबाद शहर प्रांत की सभी शाखाओं ने मिलकर मेघाणी नगर में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह धोलेरा के सान्निध्य मे जयन्ती मनाई। महावीर सिंह जी हरदासकाबास ने उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया। तत्पश्चात अजीत सिंह धोलेरा ने पूज्य श्री नारायण सिंह जी की सांघिक यात्रा की जानकारी देते हुए बताया कि पूज्य श्री तनसिंह जी के बताए मार्ग पर चलकर नारायण सिंह जी ने अपने जीवन को सार्थक बनाया। वही संघ रूपी मार्ग हमारे पास भी है। जन्मों की साधना के बाद भी दुर्लभ योग को नारायणसिंह जी ने केवल तनसिंहजी की आज्ञा का सहज व एकनिष्ठ भाव से पालन करके प्राप्त कर लिया। संघ जैसा बताता है, वैसा आचरण बनाकर हम भी वही प्राप्त कर सकते हैं जो नारायणसिंह जी ने प्राप्त किया। इसी प्रकार सूरत के कोसमाडा स्थित जानकीवन फार्म हाउस में भी नारायणसिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीण सिंह बावलियारी तथा प्रान्त प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा उपस्थित रहे। प्रवीण सिंह जी ने नारायणसिंह जी के साथ बिताए समय के संस्मरण उपस्थित स्वयंसेवकों को सुनाए। गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद मंडल की दोनों शाखाओं ने साथ मिलकर जयन्ती मनाई जिसमें लगभग 105 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। गुजरात के भाल प्रान्त में भी वल्लभीपुर राजपूत छात्रावास, धांधुका राजपूत छात्रावास, धोलेरा तथा भड़ियाद गांव में नारायणसिंह जी की जयन्ती मनाई गई। बनासकांठा प्रान्त की करबुण शाखा, पृथ्वीराज शाखा वलादर, महाराणा प्रताप छात्रावास शाखा दियोदर तथा तनेराव शाखा नारोली में भी स्वयंसेवकों द्वारा जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किए गए। जैसलमेर के बेरसियाला में जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला ने उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि नारायणसिंह जी के जीवन की सम्पूर्ण ऊर्जा एक बिंदु पर केन्द्रित रही और वह बिंदु थे तनसिंहजी। इस अनन्यता ने ही उनके जीवन में वह निखार पैदा किया कि उनके निकट संपर्क में जो भी आया वो उन्हीं का होकर रह गया। प्रान्त प्रमुख हरिसिंह बेरसियाला भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जैसलमेर शहर स्थित कार्यालय 'तनाश्रम' में भी जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें प्रान्त प्रमुख नरेन्द्र सिंह तेजमालता तथा शहर की शाखाओं के स्वयंसेवकों ने नारायणसिंह जी को पुष्पांजलि अर्पित की।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास में पारिवारिक स्नेहभोज

'मित्रवत थे, गुरुसम बन गए'

वनवास के समय सीता माता का हरण होने पर राम व लक्ष्मण उन्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते ऋषिमुख पर्वत पर पहुंचे तो प्रथम भेंट में ही भगवान राम और हनुमान जी ने एक दूसरे को पहचान लिया और हनुमान हमेशा के लिए भगवान राम के हो गए। ऐसा ही संबंध पूज्य तनसिंह जी एवं नारायणसिंह जी का था। 1959 के हल्दी घाटी उ.प्र.शि. में संघ के सहगीतों की हस्तलिखित डायरी 'झनकार' वर्षा में भीग गई। नारायण सिंह जी ने तनसिंह जी से निवेदन किया कि यह भीग गई है, आप इसकी और नकल ले लेवें और यह मुझे दे देवें। पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि तुम डायरी की बात करते हो मैं तो यह संघ ही तुम्हें सौंपना चाहता हूं। हम इसे मजाक मान सकते हैं लेकिन महापुरुषों की मजाक भी सिद्ध हो जाती है। 1979 में पूज्य तनसिंह जी के देहावसान पर वे उनके निकट ही थे। उनकी देह के साथ बाड़मेर गए लेकिन कुछ बोले नहीं। शेष सभी रो रहे थे लेकिन वे मौन थे। 12 दिन के दौरान चर्चा के दौरान कहा कि मुझे संसार या संघ से कोई लेना-देना नहीं था, मैंने केवल तनसिंह जी की आज्ञा का पालन किया,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'जो उपलब्धि हुई वह आपकी बनी रहे'

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ से संबद्ध लोगों का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न)

इन चार दिनों में जो उपलब्धि आपने पाई है वह आपकी बनी रहे। यही चाह लेकर आज आप विदाई ले रहे हैं। स्वागत क अंत विदाई में ही होता है। जन्म और मृत्यु के बीच का समय परमेश्वर का मंगलमय विधान है लेकिन जो गफलत में जीते हैं वे मरणोत्सव नहीं मना पाते। आप चार दिन यहां रहे, संघ को सुना, देखा, हृदयगम किया और अब करना शेष रहा है। यह आंगन धन्य हुआ कि उसे इस प्रकार स्वप्रेरित लोग प्रशिक्षणार्थ मिले। हो सकता है अनजाने में आपसे भूलें हुई हों लेकिन अब जानने के बाद भूलें करना अक्षम्य है। भारतीय ग्राम्य आलोकायन द्वारा संचालित आलोक आश्रम में 13 अगस्त को चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर को विदाई देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि संघ येनकेन प्रकारेण सबको प्रसन्न रखने का काम नहीं करता बल्कि श्रेष्ठ बनाने का काम करता है इस आशा के साथ कि यहां से प्रशिक्षित लोग लोक संग्रह कर लोक शिक्षण देंगे।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवक अपनी सेवा का कभी प्रदर्शन नहीं करता क्यों कि उसके द्वारा की जाने वाली सेवा किसी को दिखाने के लिए नहीं बल्कि स्वयं की आत्म संतुष्टि के लिए होती है। उसके लिए सेवा ही पूजा होती है, भजन होती है, भक्ति होती है। भक्त अपनी भक्ति के बदले प्रशंसा नहीं चाहता, फूल मालाएं नहीं चाहता वह तो अपने प्रभु का प्रेम पाकर ही कृत कृत्य होता है। इसी प्रकार सच्चा सेवक भी कभी फूल मालाएं पहनने का साहस नहीं जुटा पाता। यदि ऐसा कोई अवसर आए तो वह बच कर निकलने का उपाय ढूंढ निकालता है। ऐसे में कई बार उस पर सामने वालों की भावनाओं की बेकद्री का आरोप भी लगता है लेकिन इस आरोप को सहर्ष स्वीकार कर भी वह अपने सेवकत्व को बचा लेता है। पूज्य तनसिंह जी इस समाज को मां भगवती का स्वरूप मानते थे एवं स्वयं को इस समाज का सेवक, उपासक एवं भक्त मानते थे। समाज के प्रति अपने इस पूज्य भाव का प्रकटीकरण उन्होंने अपने साहित्य में जगह-जगह किया है। वे अपने आपको इस गौरवपूर्ण समाज का भक्त मानते थे एवं अपनी इस भक्ति के बदले समाज से मिलने वाले सम्मान को सदैव विनय पूर्वक नकार दिया करते थे। ऐसी ही एक घटना नागौर जिले के डीडवाना कस्बे की है। वहां राजपूत छात्रावास में कोई समारोह रखा गया था। पूज्य श्री उस समारोह में आमंत्रित थे एवं संघ के संघ प्रमुख के रूप में पहली बार डीडवाना पधार रहे थे। छात्रावास प्रबंध समिति के अध्यक्ष ठाकुर साहब लाडनूं बालसिंह अपने कार्यकारिणी सदस्यों, सहयोगियों सहित डीडवाना रेलवे स्टेशन पर मालाएं लेकर पूज्य श्री की अगवानी करने पहुंचे। ठाकुर शंभुसिंह रोडू व ठाकुर गुलाबसिंह निंबी जोधा भी उनके साथ थे। रेल के स्टेशन पर पहुंचने पर पूज्य श्री ने उन्हें देखा और उन सबसे बचते हुए भीड़ में होकर पैदल ही छात्रावास पहुंच गए। सभी लोगों ने सोचा तनसिंह जी नहीं पधारे हैं इसलिए वे भी छात्रावास आ गए। आगे छात्रावास में तनसिंह जी को देखकर उन सब ने उलाहना दिया कि हम सब उत्साह पूर्वक आपका स्वागत करने पहुंचे थे और आपने हमारी भावनाओं की बेकद्री की। पूज्य श्री ने विनय पूर्वक आग्रह किया कि मैं आप सबके स्नेह के सामने नतमस्तक हूं लेकिन आप सब से स्वागत करवाने एवं फूल मालाएं पहनने का मुझ में साहस नहीं है। मैं एक सेवक हूं और सेवा में सम्मान नहीं स्नेह की ही चाह रहती है। आप सब के स्नेह से मैं कृतार्थ हूं। इस प्रकार उन्होंने विनयपूर्वक उनकी भावनाओं का सम्मान भी किया एवं सम्मान आदि के प्रदर्शन की परंपरा को नकार भी दिया।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(2) बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन : इसे संक्षिप्त रूप से बीबीए के नाम से जाना जाता है। यह 3 वर्षीय स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रम है तथा इसके अंतर्गत विद्यार्थी व्यवसाय प्रबंधन से संबंधित अध्ययन करते हैं। 3 वर्षों में 6 सेमेस्टर (सत्र) होते हैं तथा इस दौरान विद्यार्थी को निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करना होता है.

- प्रबंधन के सिद्धांत
- व्यवसाय अर्थशास्त्र
- वित्तीय व प्रबंधकीय लेखाशास्त्र
- बिजनेस मैथेमेटिक्स
- मार्केटिंग मैनेजमेंट
- स्टेटिस्टिक्स
- पर्सनल मैनेजमेंट एंड इंडस्ट्रियल रिलेशन्स
- उत्पादन व माल प्रबंधन
- ऑपरेशन्स रीसर्च

बीबीए के पश्चात उच्चस्तरीय अध्ययन के लिए विद्यार्थियों के सामने निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध होते हैं.

- एमबीए (मास्टर्स ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन)
- पीजीडीएम (पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मैनेजमेंट)
- पीजीडी एचआरएम (पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट)
- पीजीडीबीएम (पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन बिजनेस मैनेजमेंट)
- पीजीपीएम (पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट)
- पीजीपी एफएबीएम (पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन फूड एंड एग्रेबिजनेस मैनेजमेंट)
- पीजीपी पीपीएम (पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन पब्लिक पालिसी मैनेजमेंट)
- एमएमएस (मास्टर्स इन मैनेजमेंट स्टडीज)

इंडियन इस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जिन्हें आईआईएम के नाम से जाना जाता है, व्यवसाय प्रबंधन के अध्ययन हेतु भारत की सर्वाधिक प्रतिष्ठित संस्था है। आईआईएम के विद्यार्थियों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों में प्रबंधकीय पदों हेतु भारी मांग रहती है।

क्रमशः

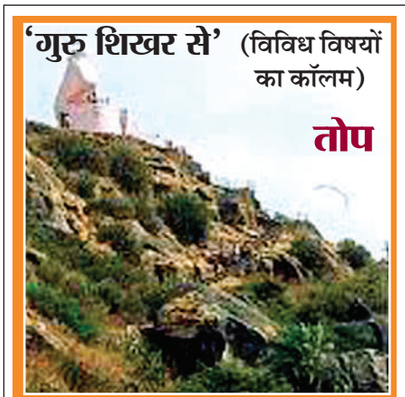

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

तोप शब्द अपने आप में भयावह है। लोग आम बोलचाल की भाषा में डरावने रूप को प्रदर्शित करने के लिए कहते है कि तू क्या तोप है? तोप मध्यकालीन इतिहास का खतरनाक शस्त्र रहा है। इससे पूर्व युद्धों में तीर कमान व तलवार तथा भालों का उपयोग होता था। बारुद का अविष्कार ईसा पूर्व में चीन में होना माना जाता है। परन्तु तोप का अविष्कार मध्यकाल में ही हुआ माना जाता है। समरकन्द (वर्तमान रूस से अलग हुए देश कजाकिस्तान की राजधानी ताशकन्द के पास का इलाका) से भारत आए मुगल आक्रान्ता बाबर ने खानवा के युद्ध में महाराणा सांगा की राजपूती सेना के विरुद्ध हमारे देश में सर्वप्रथम तोप का उपयोग किया था। भारी भरकम तोपें तब तांबे, पीतल अथवा लोहे की धातु से बनाई जाती थी। इन्हें युद्ध में हाथियों, ऊंटों अथवा पशु गाड़ियों में लादकर ले जाया करता था। यूरोपीय देश समुद्री युद्धों में इसे नावों व पोतों (जहाजों) पर लगा कर काम में लेते थे। किलों व दुर्गों की दीवारों पर तोपें सदैव युद्ध की तैयारी में रखी रहती थी। ऐसी तोपे अचल तोप कहलाती थी। जो तोपें जानवरों, पहियों अथवा ट्राली में रखी जाती थी वे चल तोपें होती थी। कई राज महलों एवं किलो की दीवारों पर तोप युद्धों की सुन्दर कलाकृति (पेन्टिंग्स) बनाई अथवा टांगी देखी जा सकती है। भारत की सभी बड़ी रियासतों में तोपों का उपयोग होता रहा है जो आज वहां प्रदर्शनी का हिस्सा बन चुकी हैं।

कश्मीर के डोगरा साम्राज्य के संस्थापक महाराजा हरिसिंह (जयपुर के कच्छावा वंश के नरेना दूदू के मूल खंगारोत राजपूत) के सेनानायक जोरावर सिंह द्वारा निर्मित लद्दाख के किले में भारी भरकम चार तोपें रखी हुई हैं जो जम्मू से दूरदराज दुर्गम पहाड़ी बर्फीले रास्तों से कैसे वहां पर ले जाकर स्थापित की गई होगी? वे उन वीर बहादुर योद्धाओं की बहादूरी एवं साहस की शौर्य गाथा को चिर स्मरणीय बनाए हुए है। राजपूताना में तो आमेर के शासकों ने जयगढ़ के किले में तोप बनाने का कारखाना बना रखा था। 1720 में जयपुर के निर्माता महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा निर्मित जयबाण तोप एशिया की सबसे बड़ी तोप मानी जाती है। भारी भरकम होने के कारण किले से बाहर नहीं ले जाया गया अतः जयगढ़ दुर्ग के डूंगर दरवाजे के ऊपर इसे स्थापित किया गया। जयबाण तोप को युद्ध में कभी भी प्रयुक्त नहीं किया गया। जयबाण तोप 50 टन वजन की है तथा 32 फीट लम्बी है। विध्वंश मचाने वाली यह तोप अपने सुन्दर निर्माण के लिए दर्शनीय है। इसमें एक फायर करने के लिए लगभग 100 किलो बारूद और 50 किलो गोला प्रयुक्त होता है। इसे केवल एक बार टेस्ट फायरिंग के बतौर भारी धमाके के साथ चलाया गया था जब इसका गोला जयगढ़ किले की प्राचीर से 35 किमी दूर चाकसू कस्बे के पास गिरा था जिससे वहां एक गहरा गड्ढा बन गया था जो आज भी तालाब के रूप में विद्यमान है।

जोधपुर का मेहरानगढ़ किला तोपों के अद्भुद संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। इसकी दक्षिणी पूर्वी दीवार पर कई तोपें प्रदर्शित हैं। तोपों के नाम भी बड़े डरावने एवं अद्भुत होते थे। इन तोपों में किलकिला, कड़क बिजली, घूड़धाणी, जमजमा, गुब्बार, बिच्छु बाण, शम्भु बाण, बगस वाहन, गजनी खां, नुसरत धनुष आदि अधिक चर्चित हैं। महाराजा अजीतसिंह द्वारा अहमदाबाद में बनवाई गई किलकिला तथा जमजमा तोपें भयानक धमाके के साथ चलती थी। शंभूबाण तोप महाराजा अभयसिंह ने गुजरात के सुल्तान को 1730 में परास्त कर प्राप्त की थी। नुसरत तोप सहित कई तोपें बहुत से घोड़ों एवं पालिकियों सहित अहमदाबाद के गवर्नर बलुन्द खां से महाराजा अभयसिंह की सेना छीन कर लायी थी। गजनी तोप राजा गजसिंह के समय जालौर दुर्ग से लाई गई थी। कड़क बिजली तोप घाणेराव से आई थी। महाराजा भीमसिंह के समय दुर्ग में नागपली, मागवा, व्याधि, मीर बख्श, मीरफ चंग, गजक, रहस्य कला तोपे तैनात थी। ब्रिटिश काल में सुन्दर तोपों का संग्रह जोधपुर में किया गया। पंचधातु की एक सुन्दर तोप है जिसका मुंह मच्छली सा व पूंछ मगरमच्छ जैसी, पांव शेर एवं गर्दन सिंह का आकार लिए हुए है। 1901 में सरप्रताप भी एक तोप चीन से खरीद कर लाए थे। मध्यकाल में दुश्मन सेना में विध्वंश मचाकर जीत दिलाने वाली ये तोपें आज केवल प्रदर्शनी एवं संग्रह का हिस्सा बन कर रह गई हैं।

संघ प्रमुख श्री का नागौर, बीकानेर व जैसलमेर प्रवास

नागौर

बीकानेर

अपने नियमित प्रवास कार्यक्रम के तहत माननीय संघ प्रमुख श्री 1 अगस्त से 3 अगस्त तक नागौर संभाग, 3 से 6 अगस्त तक बीकानेर संभाग एवं 7 से 9 अगस्त तक जैसलमेर संभाग के प्रवास पर रहे। 1 अगस्त को माननीय संघ प्रमुख श्री संघ के नागौर संभाग के संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन कुचामन सिटी पहुंचे। वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं स्थानीय स्वयंसेवकों व व्यवस्थापकों से व्यवस्था बाबत चर्चा की। 2 अगस्त को प्रातः जायल तहसील के छापड़ा गांव में आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन में शामिल होने रवाना हुए। प्रातः 11 बजे हुए इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि जहां कही भी अव्यवस्था या विसंगति है उसे दूर करना हमारा कर्तव्य है। संघ हमे हमारे उस कर्तव्य की याद दिलाता है। संसार की अव्यवस्था को ठीक करने के लिए स्वयं को व्यवस्थित करना आवश्यक है, इस हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए सद्कर्म करते रहें। पूज्य तनसिंह जी ने हम सबके जीवन को व्यवस्थित करने के लिए ही संघ का मार्ग प्रदान किया है। संघ प्रत्येक आयुवर्ग के लिए कार्यक्रम आयोजित करता है, हम यथायोग्य भागीदार बनें। इस कार्यक्रम में छापड़ा के अलावा तंवरा, गुगरियाली, खेड़ा, हीरावास, झाड़ेली, धानणी, ढींगसरी, भेड़ आदि गांवों के समाज बंधु भी शामिल हुए। 2 अगस्त को सायं 6.15 बजे नागौर शहर के टाउन हॉल में माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में पारिवारिक स्नेहमिलन आयोजित हुआ। प्रारम्भ में शिविर कार्यालय प्रमुख दीपसिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने समस्त सांसारिक उत्तरदायित्वों का पालन करते हुए विपरीत परिस्थितियों में संघ का मार्ग प्रशस्त किया। हमें भी जीवन के समस्त उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए संघ पथ पर चलते रहना है। माननीय संघ प्रमुख ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी का चिंतन था कि हमें स्वशासन तो मिल गया लेकिन सुशासन क्षत्रियत्व के बिना संभव नहीं है इसलिए उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। उन्होंने कहा कि वास्तविक क्रांति बाहर नहीं अंदर घटित होती है। व्यवस्था बदलना क्रांति नहीं है बल्कि जीवन बदलना क्रांति है। संघ जीवन बदलने का मार्ग है। सहयोगी जीवन से ही धरती पर स्वर्ग लाया जा सकता है और संघ हमारे अपनेपन को जागृत कर सहयोगी जीवन का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। संघ अपने सम्पर्क में आने वाले में चपरासी से लेकर राष्ट्रपति तक की योग्यता लाने का अभ्यास करवाता है, इस अभ्यास में नियमितता एवं निरंतरता की आवश्यकता है। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संसार का सर्वमान्य नियम है कि दिए बिना कुछ मिलता नहीं है और किए बिना कुछ होता नहीं है। जो जितना देता है उतना ही पाता है। इसलिए त्याग की भावना हमारे में बलवती बने और संघ इसे ही प्रशस्त कर रहा है। हम सब अपने आपको देखें और आगे बढ़े। ईश्वर की बनाई चीजों से प्रेम करें लेकिन आसक्ति न पालें। अपने अन्दर की द्वेष भावना को बाहर निकालें। अंतर की समस्त गंदगी के छंटने से ही अंधकार मिटेगा और परमेश्वर की राह स्पष्ट होगी। गीता हमारे अंतर को स्वच्छ करने का मार्ग बताती है। उस पर सम्पूर्ण भरोसा रखते हुए कर्म पथ पर सदा अग्रसर रहें। हम सबके जीवन में गीतोक्त साधना का अवतरण हो ऐसी कामना करता हूं।

कार्यक्रम में नागौर शहर में रहने वाले राजपूत परिवारों के साथ-साथ आसपास के सहयोगी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के बाद सभी ने सहभोज का आनंद लिया एवं अनौपचारिक चर्चा में सभी ने इस प्रकार के कार्यक्रम बार-बार आयोजित करने की बात कही। रात्रि विश्राम नागौर में करने के बाद 3 अगस्त की प्रातः श्री बालाजी स्थित स्वामी अड़गड़ानद जी महाराज के आश्रम पहुंचे। आश्रम के प्रभारी संत स्वामी गुरुचरणानंद जी से आध्यात्मिक चर्चा की। वहां से नोखा स्थित कालका माता मंदिर पहुंचे जहां नोखा क्षेत्र के समाज बंधुओं का स्नेहमिलन था। यहां माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि इस स्थान पर 70 के दशक में संघ का एक शिविर हो चुका है। संघ का जहां शिविर होता है वह स्थान संघ के लिए प्रेरणा स्थल एवं तीर्थ स्थान बन जाता है। यह स्थान हमारे लिए पारिवारिक भाव व सहयोगी जीवन का प्रेरणा स्थल है। आवश्यकता है कि हम सब यहां से प्रेरणा लेकर घर, परिवार एवं गांव में सहयोगी जीवन जीएं। पूज्य तनसिंह जी ने गीता को आधार बनाकर सभी उतरदायित्व निर्वहन करते हुए सबसे पार जाने का जो मार्ग बताया है, उस पर हम सब आगे बढ़े तो हम सब प्रेरणा स्रोत बन जाएंगे। लगातार बारिश के बावजूद भी आसपास के समाजबंधु कार्यक्रम में पहुंचे। यहां से संघ के स्वयंसेवक कानुप्रताप सिंह रोड़ा के घर पर भोजनादि करने के पश्चात् महिलाओं के स्नेहमिलन में भाग लिया। महिलाओं से संघ चर्चा करते हुए संघ के मार्ग एवं महिला विभाग के बारे में बताया। नोखा से माननीय संघ प्रमुख श्री बीकानेर पधारे एवं बीकानेर संभाग के संघ कार्यालय 'नारायण निकेतन' में रात्रि विश्राम किया। 4 अगस्त को कार्यालय में लगने वाली रविवारीय साप्ताहिक शाखा में शामिल हुए एवं बीकानेर के स्वयंसेवकों से संघ चर्चा की। इसके उपरान्त बीकानेर शहर में रहने वाले सहयोगियों का पारिवारिक स्नेहमिलन रखा गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में शिविर कार्यालय प्रमुख दीपसिंह बैण्यांकाबास ने संघ की स्थापना की पृष्ठ भूमि बताते हुए संघ एवं पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि एक दूसरे के स्नेह से संगठन बनता है। भोजन तो हम घर में कई बार करते हैं लेकिन यहां सामूहिक रूप से भोजन कर हमारे बड़े परिवार के पारिवारिक भाव एवं सहयोगी भाव का अहसास करते हैं। इसी से संगठन बनता है और संगठन से ही शक्ति बनती है। उन्होंने शिविरों की दिनचर्या की जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में आने वाला नया स्वयंसेवक अपने साथियों को देखता है और फिर अनुकरण करता है। इस प्रकार एक दूसरे की अच्छाइयों के अनुकरण का उपयुक्त वातावरण शिविरों में बनता है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघर्ष अच्छा नहीं माना जाता फिर भी सृष्टि के प्रारम्भ से ही संघर्ष चल रहा है। इस अवश्यसंभावी संघर्ष में हम संघर्ष किससे करें यह सीखने की बात है, आचरण में उतारने की बात है और संघ इसी संघर्ष को आमंत्रित करता है, संसार के कल्याण के लिए किए जाने वाले संघर्ष को अवतरित करता है और इस संघर्ष का प्रारम्भ सर्वप्रथम हमारे भीतर ही होता है। उन्होंने कहा कि जो मार्ग श्रेष्ठता की ओर नहीं ले जाता, अमरता की ओर नहीं ले जाता वह मृत्यु की ओर ले जाता है। संघ हमे सद्मार्ग की ओर ले जाने का प्रयत्न है। अमरता और श्रेष्ठता की ओर ले जाने का प्रयत्न है। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि मनुष्य को बनाकर भगवान ने लक्ष्य दिया 'मनुर्भव'। हम सब मनुष्य बनकर भगवान के दिए लक्ष्य को अर्जित करें। संसार सदा से ही क्षत्रिय की ओर देखता आया है, जब जब क्षत्रिय ने अपना दायित्व छोड़ा, संसार में विकृति आई है और आज भी यही स्थिति है। हमने सुकर्म छोड़ दिया इसलिए संसार विनाश की ओर बढ़ रहा है। जो अपने आपके लिए जीता है, वह चोर है, पाप करता है। हमने ऐसा करना प्रारम्भ किया इसीलिए विकृतियां है, इसलिए संसार को बदलना है तो अपने आप को बदलना आवश्यक है और संघ इसी आवश्यकता की पूर्ति का मार्ग है। परमेश्वर ने 'मनुर्भव' का आदेश देकर मनुष्य देह में प्राण प्रतिष्ठा का काम स्वयं मनुष्य को सौंपा है और प्राण प्रतिष्ठा के बिना मूर्ति पूज्य नहीं बनती इसीलिए हम प्राण प्रतिष्ठा की ओर प्रवृत हों। कार्यक्रम के बाद सभी ने स्नेह भोज का आनंद लिया।

सायंकाल में 5 बजे बीकानेर में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की टीम एवं उनके सहयोगी माननीय संघ प्रमुख श्री से मिलने पहुंचे। टीम सदस्य रामसिंह चरकड़ा ने माननीय संघ प्रमुख श्री को अब तक हुए कार्यक्रमों के बारे में बताया। माननीय संघ प्रमुख श्री ने उनसे चर्चा करते हुए बताया कि फाउंडेशन का उद्देश्य वर्तमान व्यवस्था के साधनों को अपनाकर आमजन का सहयोगी बनना है। उन्होंने पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित सहगायन 'लो उतर पड़ी नैया' के माध्यम से बताया कि सावधानी पूर्वक निरन्तर कर्मशील रहें, अहंकार से बचें एवं सफल नहीं होने पर कभी निराश न हो। सदैव सक्रियता व संपर्क से अहंकार, निराशा, स्वार्थ आदि शत्रुओं से बचा जा सकता है। कार्य क्षेत्र में किसी भी प्रकार की शंका हो तो मार्गदर्शन लेते रहें।

(समाचार पृष्ठ 8 पर जारी)

संपादकीय

हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर एवं धर्म

इस बार संपादकीय के शीर्षक को देखकर आपका प्रश्न हो सकता है कि हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का धर्म से क्या लेना-देना? इस प्रकार का बेमेल एवं अटपटा शीर्षक क्यों दिया गया है? तो एक सीमा तक धर्म के प्रचलित स्वरूप में आपका प्रश्न सही हो सकता है लेकिन वास्तव में तो धर्म बहुत व्यापक अर्थ वाली अवधारणा है। इतनी व्यापक की इसमें सब समा जाता है और जब सब समा जाता है तो हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर इसमें बाहर कैसे रह सकते हैं? लेकिन यहां यह शीर्षक रखने का मंतव्य धर्म की वह व्यापकता प्रकट करना नहीं है बल्कि इन दो शब्दों के माध्यम से आजकल धर्म के नाम पर प्रचलित धारणाओं पर चर्चा करना है। वास्तव में तो हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर आधुनिक तकनीक से जुड़े शब्द हैं। हार्डवेयर कम्प्यूटर सिस्टम का भौतिक भाग या घटक होता है जिसे देखा या छुआ जा सकता है। जैसे कम्प्यूटर का डिस्प्ले एक हार्डवेयर डिवाइस है, प्रिन्टर एक हार्डवेयर डिवाइस है, इसी प्रकार माउस, मदरबोर्ड आदि सभी हार्डवेयर डिवाइस हैं। सॉफ्टवेयर उन निर्देशों का या प्रोग्राम का समूह होता है जिसके माध्यम से हार्डवेयर को संचालित किया जाता है। एक कम्प्यूटर सिस्टम का हार्डवेयर तब तक उपयोगी नहीं है जब तक की उसमें कोई सॉफ्टवेयर नहीं डाला जाए। उसी प्रकार एक सॉफ्टवेयर भी किसी हार्डवेयर के माध्यम से ही धरातल पर उतरता है। इस प्रकार इन दोनों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग इन दोनों की एक दूसरे पर निर्भरता से ही संभव है। एक का अभाव दूसरे को अनुपयोगी बना देता है लेकिन एक को अधिक महत्त्व एवं दूसरे की उपेक्षा भी इसके सफल उपयोग में बाधक है। इसी बात को धर्म के परिपेक्ष में समझना आवश्यक है। धर्म का सॉफ्टवेयर उसके मूल में विद्यमान तत्व है। वैसे तो धर्म का अर्थ ही परमेश्वर तक की यात्रा है। परमेश्वर की प्राप्ति ही धर्म का गंतव्य है। उस गंतव्य तक की यात्रा ही धर्म है। इस यात्रा में सहयोग के लिए विभिन्न सोपानों के स्तर पर अलग-अलग सॉफ्टवेयर हैं। हर निचला सोपान ऊपर के सोपान पर जाने के बाद अनुपयोगी हो जाता है लेकिन नीचे के सोपान पर खड़े व्यक्ति के लिए उसका उपयोग बना रहता है। हर सोपान पर उसके सॉफ्टवेयर के अनुसार ही उसका हार्डवेयर भी है। जैसे कि प्रारंभिक सोपान में व्यक्ति की श्रद्धा को स्थिर करने के लिए किसी प्रतीक का होना आवश्यक है और इस आवश्यकता के पूर्ति के लिए मूर्ति, मंदिर आदि में उसकी श्रद्धा को स्थिर किया जाता है। यहां श्रद्धा को स्थिर करना एक सॉफ्टवेयर है और मंदिर या मूर्ति उसके हार्डवेयर है। इस प्रकार खान-पान, रहन-सहन, पूजा-पाठ आदि के लिए स्तरानुसार हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर तय किए हुए हैं। इसका एक अन्य उदाहरण शरीर को स्वस्थ रखने वाली क्रियाएं हो सकती हैं। साधना के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता होती है और इसके लिए अनेक क्रियाएं व सावधानियां तय की गई। यहां मुख्य बात तो साधन है। शरीर तो उसका साधन है और उस साधन को स्वस्थ रखने के लिए शरीर एवं श्वास की विभिन्न क्रियाएं साधन हैं। ऐसे में यदि शरीर को स्वस्थ रखना ही धर्म बन जाए तो हार्डवेयर ही प्रधानता पा लेता है। इसे एक अन्य उदाहरण से ओर स्पष्टता से समझा जा सकता है। गाय हमारे यहां उपयोगी पशु रहा है। शेष सभी दुधारु पशुओं में वह श्रेष्ठ रहा है। उसकी उस श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए उसमें पूज्य भाव पैदा कर उसकी उपयोगिता को पुष्ट किया गया लेकिन कालांतर में केवल हार्डवेयर को महत्त्व देने वाले लोगों ने गाय को भगवान बना दिया और उसके पीछे की उपयोगिता की बात नैपथ्य में चली गई। कुल मिलाकर समस्त प्रकार के प्रतीक केवल हार्डवेयर मात्र है। वे किसी न किसी सॉफ्टवेयर को व्यवहारिक बनाने के साधन मात्र हैं और ज्यों-ज्यों सॉफ्टवेयर अपडेट होता जाता है, उक्त हार्डवेयर का भी अपडेटेड होना आवश्यक होता है। यही भारतीय अवधारणा रही है। इसीलिए यहां इति की उपेक्षा नेती (न इति) की बात कही गई है। क्यों कि परमेश्वर अंतिम लक्ष्य है और वह असीम है उसे किसी इति में नहीं बांधा जा सकता। लेकिन दुर्भाग्य से भारत के मानस को एक विशिष्ट प्रकार के सॉफ्टवेयर पर अटका कर उसके प्रतीकों को ही अत्यधिक महत्व देने की एक रूढि कालांतर में दृढ़ होती गई जिसके परिणाम स्वरूप नेति नेति की वैज्ञानिक अवधारणा पर चोट पड़ी। धर्म के नाम पर ठहराव के समर्थक वर्ग ने इस प्रकार की व्यवस्था बनाई कि सामान्य भारतीय मानस कुछ प्रतीकों के ईर्द-गिर्द आबद्ध होकर रह गया। धर्म के इस बाहरी स्वरूप ने विगत दिनों इतना अधिक महत्त्व पा लिया कि हार्डवेयर ही धर्म की परिभाषा बन गए हैं। धर्म यात्रा के प्रारंभिक सोपान पर बैठे यात्री धर्माधिकारी बन गए हैं और वे भारतीयता के मूल में विद्यमान नेति नेति की वैज्ञानिकता पर चोट कर रहे हैं। हम जो मानते हैं, वही सत्य है, इसके अतिरिक्त सब व्यर्थ है, ऐसी धारणा भारतीय धारणा नहीं है और वास्तव में तो भारत का विगत सदियों का संघर्ष ही इस अभारतीय अवधारणा से रहा है। पश्चिम से आई इस अवधारणा से लड़ते-लड़ते हमारी पीढ़ियां खप गईं लेकिन हमने हमारी वैज्ञानिकता को नहीं छोड़ा। हमारा सॉफ्टवेयर निरन्तर अपडेशन की संभावना बनाए हुए था इसीलिए तो किसी भी सोपान पर अटके बिना हम आगे बढ़ते रहे लेकिन कालांतर में ठहराव आया और आजकल देश की फिजां में वह ठहराव फिर से अपना स्थान बना रहा है इसीलिए तो किसी का किसी के हाथ का बना खाना न खाना या खाने का ऑर्डर निरस्त करवाना भारत जैसे देश में धार्मिक विमर्श बन रहा है और इसके पक्ष या विपक्ष में विभिन्न प्रकार के तर्क गढ़े जा रहे हैं। इसीलिए तो मंदिर, गाय, भोजन, देश की भौतिक सीमाएं आदि प्रतीकों को बढ़ा-चढ़ाकर चर्चा का विषय बनाया जा रहा है और मूल तत्वों को दरकिनार किया जा रहा है। यही तो कारण है कि गीता जैसे अद्भुत प्रगतिशील धर्मग्रन्थ पर प्रतीकों को प्रधानता देने वाले पोथे प्रधानता पा रहे हैं और ऐसे प्रतीकों में जनमानस को उलझा कर निहित स्वार्थी तत्व अपना स्वार्थ साधते जा रहे हैं। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि हार्डवेयर का अपना महत्त्व है लेकिन सॉफ्टवेयर का उससे भी अधिक महत्त्व है और साथ ही दोनों के समुचित सामंजस्य का भी उतना ही महत्व है। आप हार्डवेयर को बहुत संभाल रहे हैं लेकिन यदि उसमें सॉफ्टवेयर गलत इंस्टाल हो गया तो रावण जैसे बुद्धिमान और बलशाली होकर भी आप अधर्म के प्रतीक बन सकते हैं। साथ ही आपके पास सॉफ्टवेयर लेटेस्ट वर्जन का है लेकिन हार्डवेयर उपयुक्त नहीं है तो भी हैंग होने की पूरी संभावना है। इसीलिए आएं अपने आपकी निरन्तर प्रगति के लिए समय-समय पर अद्यतन होते रहें, कहीं रुके नहीं, अटके नहीं।

खरी-खरी

सड़क पर संघर्ष

विगत दिनों आर्थिक आधार पर आरक्षण की विसंगतियों को लेकर विभिन्न संगठनों ने आवाज उठाई। इस विषय को सोशल मीडिया पर भी बड़े जोर शोर से उठाया गया एवं सरकार तक सबके प्रयास से बात पहुंचाने में सफलता मिली। हालांकि धरातल पर कुछ होना बाकी है लेकिन सरकार ने स्वीकार किया कि विसंगतियां है और इन पर काम किया जाना आवश्यक है। एक मार्ग खुला है जिसमें सबके प्रयास से प्रगति भी सुनिश्चित होगी। लेकिन इन सब प्रयासों के बीच एक बात कुछ लोगों द्वारा बार-बार उठाई जा रही थी कि सड़क पर संघर्ष किया जाना चाहिए। सड़क पर संघर्ष से उनका अर्थ है कि समाज सड़कों पर उतरे, धरना-प्रदर्शन हो, घेराव किए जाएं, मार्ग रोके जाएं, पुलिस प्रशासन से संघर्ष की स्थिति बने, कानून हाथ में लिए जाएं और अनेक लोगों पर मुकदमें दर्ज हो। आप कह सकते हैं कि कुछ युवा होते किशोर ऐसी बातें करते हैं, उन पर इतनी गंभीरता आवश्यक नहीं है। हां आपकी बात सही है, युवा लोगों में जोश होता है और वह जोश सामान्यतः ऐसे तरीके पसंद करता है। उनकी बाजुओं का बल उसे हर समस्या का हल अपनी बाजुओं के दम पर करने को प्रेरित करता है। लेकिन क्या यह संभव है? यदि संभव नहीं तो क्या युवा को ऐसी भ्रामक सोच के साथ स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए या फिर उसकी इस सोच का समुचित परिमार्जन किया जाना चाहिए। लेकिन यहां तो बात केवल युवाओं की नहीं की जा रही बल्कि उन प्रोढ़ों की भी की जा रही है जो सड़क पर संघर्ष की बात कर रहे थे। आप कह सकते हैं कि कुछ कम पढ़े लिखे एवं कानून को न जानने वाले लोग ऐसी बात करते हैं इसलिए उन्हें समझाया जाना चाहिए लेकिन ऐसा भी नहीं है। पढ़े लिखे ही नहीं बल्कि अफसर बनकर प्रशासन में जिम्मेदारी का पद संभाल रहे लोगों के भी ऐसे विचार सुने जा सकते हैं कि साहब सड़क पर संघर्ष करना पड़ेगा। ऐसे में आप यह मान सकते हैं कि इस लेख का उद्देश्य सड़क पर संघर्ष का विरोध करना है तो ऐसा भी नहीं है। सड़क पर संघर्ष नितांत निरर्थक नहीं है। उसकी भी जरूरत है, महत्ता भी है लेकिन कब? यही प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। हमारे द्वारा अपनाया जाने वाला साधन कम ऊर्जा खर्च करने वाला एवं अधिकतम परिणाम देने वाला हो। यदि ऐसे साधन निष्प्रभावी हो जावें तो उत्तरोत्तर हमें अधिक ऊर्जा खर्च होने वाले एवं परिणामों की अनिश्चितता वाले साधनों की ओर बढ़ना चाहिए। अब हम निर्णय करें कि क्या सड़क पर संघर्ष न्यूनतम ऊर्जा खर्च करने वाला साधन है?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	सम्राट पृथ्वीराज चौहान सभा भवन **मकराना** (नागौर)।
2.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	गोगाजी मंदिर **तेलवाड़ा** (बाड़मेर)।
3.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	**नोगामां/कलरिया** (बांसवाड़ा)।
4.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	मीरां मेदपाट भवन, **उदयपुर।**
5.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	पोटेंजा फार्म हाउस, बलेश्वर गांव **सूरत** (गुजरात)। **सम्पर्क सूत्र :** खेतसिंह चांदसरा 9974493721
6.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	राजपूत छात्रावास, **डीडवाना** (नागौर)।
7.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	सालक माताजी मंदिर **बावरला** (जालोर)। **सम्पर्क सूत्र :** कल्याणसिंह 9414154723
8.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	आनंद महाराज की धूणी, **बगड़ी नगर** (पाली)। बगड़ी गांव से सोजत रोड़ की तरफ पहले फाटक के पास।
9.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**आसकन्द्रा** (जैसलमेर)। पोकरण व नाचना से हर घंटे में बस उपलब्ध।
10.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**टालनपुर** (नागौर)। जोधपुर से हर घंटे बस उपलब्ध।
11.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**जेठानिया** (जोधपुर)। सेतरावा से 10 किलोमीटर दूर।
12.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**ईशरू** (जोधपुर)। ओसियां से हर घंटे बस उपलब्ध।
13.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**गंगाला** (बाड़मेर)। चौहटन रोड़ पर सणाऊ फांटे से 10 किमी दूर।
14.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**चोचरा** (बाड़मेर)। शिव से निजी साधन उपलब्ध।
15.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**राणासर कल्ला** (बाड़मेर)। धोरीमन्ना व सेड़वा से निजी बस उपलब्ध।
16.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**भलूरी** (बीकानेर)। बीकानेर, बज्जू व पूंगल से बसें उपलब्ध।
17.	दो दिवसीय (बाल शिविर)	24.08.2019 से 256.08.2019 तक	लिटिल एन्जल्स स्कूल, **गनोड़ा** (बासंवाड़ा)।
18.	दो दिवसीय (बाल शिविर)	24.08.2019 से 256.08.2019 तक	जौहर भवन, गांधीनगर, **चित्तौड़गढ़।**
19.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	31.08.2019 से 02.09.2019 तक	प्राथमिक शाला **काणेटी** (गुजरात)। **सम्पर्क सूत्र :** दीवानसिंह काणेटी 9638358777
20.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	31.08.2019 से 02.09.2019 तक	**मेजरपुरा,** तहसील बडगांव, बनासकांठा (गुजरात)।
21.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**सोढ़ांकोर** (जैसलमेर)।
22.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**बरांगणा** तहसील डीडवाना (नागौर)।
23.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**बड़ी रूपाहेली** (भीलवाड़ा)। भीलवाड़ा से अजमेर रोड पर बड़ी रूपाहेली चौराहे पर उतरें।
24.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	मोडिया महादेव, **विजयपुर** (चित्तौड़गढ़)।
25.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	आलोक आश्रम, **बीजीए** (बाड़मेर)।
26.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	मामाजी का थान, **हरियाली** (जालोर)। सांचौर हरियाली मार्ग पर स्थित।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

जो उपलब्धि... (पृष्ठ एक का शेष)

जो पाया है उसे लोक में ले जाना है और लोक में आलोक फैलाना है। श्रेष्ठ क्षत्रियों का समूह संसार में क्या नहीं कर सकता और ऐसा समूह यहां बन रहा है। संसार की करुणा पूर्वक सेवा करें चाहें वे हमारे समाज के हो, चाहें अन्य समाज के। मेरे दृष्टिकोण से इससे इतर कोई मार्ग दिखाई नहीं देता, इसके द्वारा हम अपने लक्ष्य की ओर द्रुत गति से बढ़ सकते हैं। लेकिन भक्त हनुमान की तरह 'राम काज किए बिना मोहि कहां विश्राम' का भाव बनाए रखना आवश्यक है। जो हमारे अपने संकल्प में बद्ध होते हैं वे ही बंधु कहलाते हैं और आप जैसे बंधु संसार में दुर्लभ हैं। गर्व न करें कि हम श्रेठ हैं बल्कि गतिमान बने रहें। श्रेष्ठ वह है जो नेष्ट को श्रेष्ठ बना दे, विकसित वह है जो अविकसित को विकसित कर दे, ज्ञानवान वह है जो संसार में ज्ञान बांटता है। आप उन ऐतिहासिक पुरूषों में शामिल हो रहे हैं जो समाज, राष्ट्र और मानवता को समझ कर तड़फने लगे हैं लेकिन हमारी यह तड़फन चिल्लाने के लिए नहीं बल्कि विस्तार करने के लिए है। अपने आपको जोड़े, परिवार को जोड़ें, समाज और राष्ट्र को जोड़ते हुए मानव मात्र को अुपने घेरे में ले लें। हम मरने के लिए नहीं बल्कि अमर होने के लिए आए है इसलिए क्षणिक निराशा में आशा को न छोड़ें। यह विदाई कोई दुर्घटना नहीं बल्कि नए स्वागत का द्वार है।

10 अगस्त से 13 अगस्त तक आयोजित इस शिविर में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के माध्यम से संघ को समझने की चाह रखने वाले लोग शामिल हुए। 25 वर्ष से अधिक उम्र के 125 बंधुओं ने निरन्तर चार दिन तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से संघ को समझा एवं संघ शिक्षा के आलोक में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउण्डेशन के संदेश को प्रसारित करने को स्वतः संकल्पित हुए। शिविर का संचालन संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने माननीय संघ प्रमुख श्री के मार्गदर्शन में किया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

प्रश्न समाज के उत्तर गीता से

प्रश्न 4:- परमात्मा को प्राप्त करने की कई विधियां है?

उत्तरः- कदापि नहीं! भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं- अर्जुन! इस कर्म को किये बिना न तो कोई पूर्व में परमात्मा को प्राप्त कर सका है और न भविष्य में कोई प्राप्त कर सकेगा, परन्तु जिन महापुरुष के कर्मों के परिणाम में आत्मा विदित है, जो आत्मतृप्त हैं, आत्मस्थित हैं उन महापुरुष के लिए किंचित् भी कर्तव्य शेष नहीं है, प्राप्त होने योग्य कोई वस्तु अप्राप्य नहीं है। इसलिए कर्म करने से न उन्हें कोई लाभ है और कर्म छोड़ देने से न कोई क्षति। फिर भी वे महापुरुष पीछे वालों के मार्गदर्शन के लिए कर्म में भली प्रकार बरतते हैं। ऐसे सद्गुरु लोकहित के लिए होते हैं।

अनन्तकाल से जनकादि जितने भी ऋषि हुए हैं इसी कर्म को करके परमनैष्कर्म्य स्थिति को प्राप्त हो गये, जहां पहुंचने पर कर्म किये जाने से न कोई लाभ है और कर्म छोड़ देने से न कोई क्षति। वे सहज स्वरूप की स्थिति पा गये। इसलिए क्रिया तो एक ही है।

किन्तु इस विधि के कई स्तर हैं। इसका आरम्भ होता है प्रभु के गुणगान से, पारम्परिक भगवच्चर्चा से, पत्र-पुष्प-जल इत्यादि समर्पण से। यह आरंभिक कक्षा है।

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥ गीता, 10/9

निरन्तर मुझमें मन लगाने वाले मेरा गुणगान करते हुए वे प्रसन्न होते हैं, आपस में मेरी ही चर्चा करते हैं। शुरूआत यहीं से है।

क्रमशः स्तर उन्नत होने पर भगवान उठाने-बैठाने-चलाने लगते हैं। नियत कर्म अब प्रशस्त हो गया। इसके पश्चात् कर्म एक, साधना का परिणाम एक, मिलने वाली सुविधा एक-जैसी ही सबको मिलती है।

भगवान कहते हैं- अर्जुन! ''तू निमित्त मात्र होकर खड़ा भर रह, कर्त्ता-धर्त्ता तो मैं हूं, विजय तुम्हारी होगी- 'निमित्त मात्रं भव सव्यसाचिन'। मेरे द्वारा मारे हुए इन मुर्दों को मार, यश प्राप्त कर।'' वस्तुतः जब तक परमात्मा स्वयं आपकी आत्मा से अभिन्न होकर जागृत न हो जाय, मार्गदर्शन न करने लगे तब तक पूर्ण निवृत्ति दिला देने वाली साधना अभी जागृत ही नहीं हुई।

इस प्रकार साधना एक है, विधि एक है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥ गीता, 16/23

इस शास्त्र-विधि को त्यागकर अन्य-अन्य विधियों से जो भजता है उसके जीवन में न सुख है, न सिद्धि है और न परमगति ही है। वह सबसे भ्रष्ट हो जाता है। इसलिए-

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधिनोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥ गीता, 16/24

तुम्हारे कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के निर्णय में शास्त्र ही प्रमाण है। किसी अन्य शास्त्र के पीछे न भागें। भगवान स्वयं कहते हैं-

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत॥ गीता, 15/20

हे निष्पाप अर्जुन! यह गोपनीय से भी अति गोपनीय शास्त्र मेरे द्वारा कहा गया। कौन-सा शास्त्र? यही गीताशास्त्र। गीता अपने आप में सम्पूर्ण शास्त्र है। इसका भली प्रकार अध्ययन करके आचरण कर। तू अमृतमय अनामय परमपद को प्राप्त करेगा, सदा रहने वाला जीवन और समृद्धि प्राप्त कर कृतार्थ हो जायेगा। **(क्रमशः)**

प्रतिभाएं

गजराजसिंह बने महासचिव : जयपुर की द डिस्ट्रिक्ट एडवोकेट बार एसोसिएशन के चुनावों में दौसा जिले के कैलाई गांव निवासी एवं वर्तमान में जयपुर में रह रहे गजराजसिंह राजावत पुनः महासचिव के रूप में निर्वाचित हुए हैं।

निशा कंवर को स्वर्ण पदक : महरोली निवासी निशा कंवर ने क्रोएशिया में आयोजित पेराग्रेम्स में 10 मीटर एयर पिस्टल निशानेबाजी में स्वर्ण पदक हासिल किया है।

हिमांशु शेखावत : निराधनु (झुंझुनूं) निवासी देवेन्द्रसिंह के पुत्र हिमांशु सिंह शेखावत ने कक्षा 10 में 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। हिमांशु वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानीसिंह निराधणु का पौत्र है।

प्रेरिता कंवर राठौड़ : रामपुरा (चुरू) निवासी रणविजयसिंह की पुत्री प्रेरिता कंवर ने कक्षा 10 में 90 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा वरिष्ठ स्वयंसेवक सबलसिंह की पौत्री है।

मिमांसा कंवर राठौड़ : वरिष्ठ स्वयंसेवक सबलसिंह रामपुरा (चुरू) की पौत्री एवं रणविजय सिंह की पुत्री मिमांसा कंवर राठौड़ ने 12वीं कक्षा में 95 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

ले. जनरल आरपी सिंह बने कमांडिंग चीफ : ले. जनरल

आरपी सिंह (एवीएसएस, वीएसएम) ने 31 जुलाई को जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ (पश्चिमी कमान) का पद भार ग्रहण किया है। 7 अक्टूबर 1961 को उत्तरप्रदेश के एक गांव में जन्में आरपी सिंह ने 12 जून 1982 को 1 मैकेनाइज्ड इन्फेक्ट्री (1 मद्रास) में कमीशन प्राप्त किया। आपने 24 मै.इ. (20 राजपूत) की कमान 2002 से 2005 तक बाड़मेर और बीकानेर क्षेत्र में संभाली। अति विशिष्ट सेवा मैडल व विशिष्ट सेवा मैडल से सम्मानित आरपी सिंह ने विदेश सेवा सहित सेना के अनेक महत्वपूर्ण पदों पर काम किया है।

आयशा कंवर राठौड़ बनी हैड गर्ल्स ऑफ स्कूल : वरिष्ठ

स्वयंसेवक कर्नल हिम्मत सिंह पीह की सुपौत्री एवं कर्नल शक्ति सिंह की पुत्री आयशा कंवर आर्मी पब्लिक स्कूल बैंगलोर की हैड गर्ल ऑफ स्कूल चुनी गई है। छात्रा ने वाद विवाद प्रतियोगिता में भी जीत हासिल की।

रामगढ़ की तहसील स्तरीय बैठक : जैसलमेर जिले की रामगढ़ तहसील के श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन से संबंध समाज बंधुओं की बैठक 4 अगस्त को राजपूत छात्रावास रामगढ़ में संपन्न हुई। बैठक में फाउण्डेशन के सहसंयोजक आजादसिंह शिवकर ने फाउण्डेशन की पृष्ठभूमि, उद्देश्यों, अब तक हुए कार्य एवं आर्थिक आधार पर वंचित वर्ग को मिले आरक्षण के बारे में जानकारी दी। उल्लेखनीय है कि जैसलमेर की जिला बैठक के बाद ई मित्र चलाने वाले कुछ समाज बंधुओं ने संकल्पपूर्वक ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र बनवाने का काम अपने हाथ में लिया और अभी तक की जानकारी के अनुसार रामगढ़ तहसील में राजपूतों के सर्वाधिक प्रमाण-पत्र बने है।

(पृष्ठ चार का शेष)

सड़क पर... क्या इस साधन में परिणामों की निश्चितता सर्वाधिक है? यदि वर्तमान व्यवस्था में हुए आंदोलनों की बात करें तो अब तक का अनुभव तो ऐसा नहीं है? ऐसे में सड़क पर संघर्ष की मनाही नहीं है लेकिन यह अंतिम विकल्प होना चाहिए। जब इससे सरल एवं कम ऊर्जा खपाने वाले सभी विकल्प असरहीन हो जाएं तो निश्चित रूप से इस विकल्प को भी आजमाना चाहिए लेकिन प्रारम्भ से ही इस प्रकार की बातें करना तो समझदारों की नासमझी ही मानी जाएगी। प्रोढ़ों का बचपना ही कहा जाएगा। पढ़े लिखों की अनपढ़ता ही कही जाएगी। जिम्मेदारों की गैर जिम्मेदारी ही कही जाएगी और विडंबना यह है कि हमारे समाज में इस प्रकार की नासमझी, इस प्रकार का बचपना, इस प्रकार की अनपढ़ता एवं इस प्रकार की गैर जिम्मेदारी देखने को मिलती है। इन सब बातों को देखकर, सुनकर और पढ़कर ऐसा लगता है कहीं हमारे समाज की पसंद तो नहीं बदल गई है? व्यवस्था को चलाने वाला समाज, व्यवस्था को बनाने वाला समाज एवं व्यवस्था का पालन करने वाला समाज यदि सदैव व्यवस्था के खिलाफ खड़ा होने को आतुर रहेगा तो क्या यह चिंता का विषय नहीं है? माना जा सकता है कि कोई भी व्यवस्था पूर्ण नहीं होती। राम राज्य के बाद अभी तक राम राज्य का कोई उदाहरण नहीं पनपा है। लेकिन व्यवस्था की कमियों को दूर करने की चाह रखने वाले लोग यदि व्यवस्था को भंग करने के लिए ही कमर कस कर सदैव तैयार रहेंगे तो क्या वे व्यवस्था की कमियों को दूर कर पाएंगे? वास्तव में तो सड़क पर संघर्ष एक विध्वंशक सोच है, बनाने से पहले मिटाने की बात करती है और कुछ बनाने की योजना या कुव्वत के बिना मिटाने की बात करना तो भारतीय सोच नहीं है। हां पश्चिम में पनपा लाल सलाम जरूर सब बने बनाए को मिटाने की बात करता है लेकिन यह सोच भारत की तो नहीं है। यदि भारतीयता का सदा से रक्षण और पोषण करने वाली कौम स्वयं ही भारतीयता के हनन की बात करेगी तो फिर वह भारतीयता बचेगी कैसे जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने सर्वस्व बलिदान किया था। ऐसे में विचारणीय हो जाता है कि हमारे उन महान पूर्वजों की संतान हम क्यों सदैव बाजुओं के बल की बात करते हैं। बाजुओं का बल तो रावण दिखाया करता था, दुर्योधन दिखाया करता था, जरासंध दिखाया करता था या कंस दिखाया करता था। औरंगजेब और अलाउद्दीन भी तो बाजुओं के दम पर ही तो दमित करना चाहते थे लेकिन हमारे महान पूर्वजों ने तो युक्ति बुद्धि का सामंजस्य किया। साथ ही इस युक्ति बुद्धि के सामंजस्य के द्वारा व्यवस्था को कायम करने में प्रवृत हुए इसलिए आवश्यक है कि हम उनके उन आदर्शों का अनुकरण करते हुए मिटाने की नहीं, बनाने की बात करें और सड़क पर संघर्ष को अंतिम हथियार बनाएं।

गुप्त वंश

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद जो विकेन्द्रीकरण का युग प्रारम्भ हुआ, वह चौथी शताब्दी तक चलता रहा। इस दौरान कुछ शासकों ने भारतीय इतिहास में अपनी चमक जरूर बिखेरी पर वो स्थायी प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहे। भारत के उत्तर-पश्चिम सीमावर्ती व पश्चिमी भाग में कुषाण व शकों जैसी विदेशी शक्तियों ने अपने राज्य स्थापित किए हुए थे। उत्तर भारत व मध्य भारत में अनेक छोटे-छोटे शक्तिहीन राज्य थे। इस समय को हम अव्यवस्था, अराजकता व दुर्बलता का काल कह सकते हैं। देश में शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता का अभाव था। यह युग किसी महत्वाकांक्षी महान सेनानायक की महत्वकांक्षाओं का पूरा करने के लिए एक सुनहरा अवसर था, परिणाम स्वरूप मगध के गुप्त वंश में ऐसे महान सेनानायकों का उदय हुआ।

प्रारंभिक इतिहास : गुप्त वंश के शासकों के अभिलेखीय साक्ष्यों के अनुसार प्रथम शासक श्रीगुप्त था जिसका उल्लेख कही-कही महाराज गुप्त के नाम से भी मिलता है इसका शासन काल ईसा की तीसरी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि ये लिच्छवियों के सामन्त के रूप में मगध का शासक था। श्री गुप्त के उत्तराधिकारी घटोत्कच के समय गुप्त वंश को गंगाघाटी के क्षेत्र में राजनीतिक महता प्राप्त हुई, इसे गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक माना जाता है, इसका राज्य केवल मगध तक ही सीमित था।

चन्द्रगुप्त प्रथम : घटोत्कच का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त गुप्त वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था जिसने अपने छोटे से पैतृक राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया, जिसे उसके उत्तराधिकारियों ने एक महान साम्राज्य में परिवर्तित किया। चन्द्रगुप्त मगध के सिंहासन पर 319 ई. में बैठा। चन्द्रगुप्त के शासन काल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना उसका लिच्छवियों के साथ वैवाहिक संबंध था। चन्द्रगुप्त ने अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए वैशाली की लिच्छवी राजकन्या कुमार देवी से विवाह किया। इस वैवाहिक संबंध से चन्द्रगुप्त की राजनीतिक स्थिति मजबूत हुई। चन्द्रगुप्त को राज्य विस्तार के लिए शक्तिशाली लिच्छवियों का सहयोग प्राप्त हुआ। इस विवाह के कुछ समय बाद चन्द्रगुप्त को लिच्छवियों का राज्य वैशाली प्राप्त हो गया। लिच्छवियों से वैवाहिक संबंध इतना महत्त्वपूर्ण था कि उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने अपने अभिलेखों में अनेक स्थानों पर स्वयं को लिच्छविय दौहित्र कह कर गर्व का अनुभव करता है। वैशाली की प्राप्ति के बाद चन्द्रगुप्त मगध और उसके आसपास के क्षेत्र का सार्वभौम शासक बन बैठा। इसके बाद चन्द्रगुप्त ने कौशाम्बी तथा कौशल को विजित कर मगध राज्य में मिला दिया। इसके उपरान्त उसने बंगाल पर भी विजय पाई। उसका राज्य मगध से विस्तारित होता हुआ प्रयाग तक फैला हुआ था। चन्द्रगुप्त ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। चन्द्रगुप्त प्रथम को इतिहास में एक नए संवत के प्रवर्तन का श्रेय भी दिया जाता है जिसे परवर्ती लेखों में गुप्त संवत कहा गया। निःसन्देह वह अपने वंश का प्रथम महान शासक था। अपने पड़ौसी राज्यों को जीत कर व राज्य में सुशासन स्थापित कर उसने अपने उत्तराधिकारियों के लिए महान गुप्त साम्राज्य के निर्माण की भूमिका तैयार कर दी थी। उसने अपने जीवन काल में ही अपने सुयोग्य पुत्र समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। यदि हम चन्द्रगुप्त प्रथम को गुप्त सम्राज्य का वास्तविक संस्थापक कहें तो ये कहीं से भी गलत नहीं है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ एक का शेष)

पूज्य नारायणसिंह...

मोहनगढ़ प्रांतप्रमुख हाकम सिंह देवड़ा की उपस्थिति में इन्दिरा कॉलोनी स्थित विवेकानंद स्कूल शाखा मैदान में जयन्ती मनाई गई। रजवाड़ा फोर्ट शाखा मैदान में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें काले डूंगरराय छात्रावास शाखा के स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। राजपूत छात्रावास जैसलमेर में वरिष्ठ स्वयंसेवक सांवल सिंह मोढ़ा की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रामगढ़ प्रान्त में भोजराजसिंह की ढाणी में जयन्ती मनाई गई जिसमें प्रान्त प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ उपस्थित रहे।

बाड़मेर शहर प्रान्त का जयन्ती कार्यक्रम तनसिंह जन कल्याण संस्थान के तत्वावधान में राजपूत सभा भवन गांधीनगर बाड़मेर में आयोजित हुआ जिसमें संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह रानीगांव उपस्थित रहे। उन्होंने उपस्थित स्वयंसेवकों से कहा कि यदि हम नारायणसिंह जी की निष्ठा के हजारवें अंश को भी अपने में उतार पाये तो हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा। निष्काम रूप से समाजसेवा में जुट जाना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। बाड़मेर के ही चौहटन में न्यू विरात्रा मॉडर्न होस्टल में समारोह पूर्वक नारायणसिंह जी की जयन्ती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह जी रानीगांव व प्रांतप्रमुख उदय सिंह देदूसर उपस्थित रहे। कमलसिंह जी ने नारायणसिंह जी के बारे में बताया कि उनके त्याग ने संघ की नींव को दृढ़ बनाया है। उन्होंने ही अपने स्नेह व प्रेम से संघ में पारिवारिक भाव को स्थायित्व प्रदान किया। इसी प्रकार भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम के तत्वावधान में गुड़ामालानी प्रान्त के धोरीमना मंडल में कनीरामजी का रामद्वारा में नारायणसिंह जी रेडा की जयंती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रकाश सिंह भुरटिया व प्रांत प्रमुख गणपत सिंह बूठ उपस्थित रहे। भुरटिया ने बताया कि नारायणसिंह जी का व्यक्तित्व एक उच्च कोटि के भक्त का व्यक्तित्व है। उनकी अनन्यता हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बने और हममें भी संघ के प्रति अनन्य भाव जागृत हो इसी में ऐसे कार्यक्रमों की सार्थकता है। चांधन प्रान्त में भी मूलाना गांव स्थित नागणेची माता मंदिर के प्रांगण में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांतप्रमुख तारेंद्रसिंह झिंझनियाली उपस्थित रहे।

इसी प्रकार जालोर संभाग के सांचोर प्रान्त के सुरावा मंडल में नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती वडेसी माता मंदिर में मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी उपस्थित रहे। सभी उपस्थित समाज बंधुओं और स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। नारायण सिंह जी रेड़ा का जीवन परिचय वरिष्ठ स्वयंसेवक ईश्वर सिंह रामसर ने दिया। संभाग प्रमुख ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि नारायण सिंह जी ने संघ को प्रयोग करके समझा, उन्होंने संघ में जो भी बात मौखिक रूप से बताई गई उसको अपने जीवन में उतारकर स्वयं पर प्रयोग किया और यह सिद्ध किया कि संघ सम्पूर्ण योग मार्ग है। कार्यक्रम में सांचोर, रानीवाड़ा, जसवंतपुरा, भीनमाल एवं रेवदर मंडल के समाजबंधु सपरिवार सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के पश्चात स्नेहभोज भी रखा गया। नागौर में कुचामनसिटी स्थित साधना संगम संस्थान के श्री आयुवान निकेतन में भी पूज्य श्री नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवत सिंह सिंघाना व संभाग प्रमुख शिम्भु सिंह आसरवा उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भगवत सिंह जी ने कहा कि नारायण सिंह जी रेड़ा एक आदर्श स्वयंसेवक के रुप में हम सबके लिए प्रेरणास्रोत हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बनाकर उन्होंने ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जो आज हम सभी के लिए अनुकरणीय है। बांसवाड़ा के नौगामा में भी 4 अगस्त को जयन्ती समारोह रखा गया जिसमें संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला उपस्थित रहे। उन्होंने उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि नारायणसिंह जी ने संघमार्ग पर चलते हुए अपने स्वधर्म अर्थात क्षत्रिय धर्म का निर्वाह किया और जीवन लक्ष्य को प्राप्त किया। हम भी संघ से जुड़कर क्षत्रिय धर्म का पालन करें इसी में हमारे जीवन की सार्थकता है। इसी प्रकार मुम्बई में भारी बारिश के बीच भी स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक नारायणसिंह जी की जयन्ती मनाई। मुम्बई प्रान्त में तनेराज शाखा गिरगांव चौपाटी, नारायण शाखा भायंदर, वीरदुर्गादास शाखा मलाड़, आयुवान शाखा ऐरोली और कल्ला रायमल्लोत शाखा कल्याण में स्वयंसेवको ने जयन्ती मनाई तथा नारायणसिंह जी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा की। बालोतरा प्रान्तप्रमुख राणसिंह टापरा भी इस दौरान उपस्थित थे। जयन्ती कार्यक्रम के पश्चात भायंदर में 15 अगस्त से लगने वाले शिविर पर भी चर्चा की गई। जोधपुर संभाग में शेरगढ़ प्रांत के श्री मंगल बाल उच्च माध्यमिक विद्यालय बेलवा की बालक एवं बालिका शाखा एवं राजगढ़ में रानी पद्मावती (बालिका) एवं महाराणा प्रताप (बालक) शाखा में भी नारायणसिंह जी की जयन्ती हर्षोल्लास से मनाई गई। उदयपुर में श्री भूपाल नोबल्स संस्थान के परिसर में जयन्ती मनाई गई जिसमें भीलवाड़ा संभाग प्रमुख बृजराजसिंह खारड़ा उपस्थित रहे। इसी प्रकार नारायण सिंह जी की जयंती बीकानेर में शाखा स्तर पर विजय भवन, नारायण निकेतन, पंचवटी छात्रावास, मोतीगढ़, झंझेऊ, कीरतासर आदि स्थलों पर मनाई गई। छतरगढ़ प्रान्त के मोतीगढ़ शाखा में भी जयंती मनाई गई। दिल्ली की शास्त्रीनगर शाखा में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें प्रांतप्रमुख रेवतसिंह धीरा उपस्थित रहे। शिव प्रांत के भिंयाड़ कस्बे में भी नारायणसिंह जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भिंयाड़ उपस्थित रहे। पोकरण स्थित राजपूत छात्रावास के शाखा मैदान में भी जयन्ती समारोह आयोजित हुआ। इनके अलावा भी विभिन्न शाखाओं में जयंती मनाने के समाचार है। दुर्गा महिला विकास संस्थान की बालिकाओं ने भी संस्थान में जयंती मनाई।

मित्रवत थे...

आज वे नहीं है तो किसकी आज्ञा का पालन करूं, मैं अपना बिस्तर लेकर गांव चला जाऊंगा। लेकिन 12 दिन के दौरान ही उन्होंने अपना निर्णय बदला। संघ में केवल संघ प्रमुख के चुनाव का ही विधान है और उसके अनुसार संघ प्रमुख कभी त्याग पत्र नहीं दे सकता। उन्हें अपनी उस जिम्मेदारी का अहसास था, स्मरण था, छोड़ नहीं सकते थे इसलिए किसी योजना का खुलासा किए बिना वेर का थान रवाना हुए। वहां पूर्व में किए किसी अनुष्ठान का शेष रहा दशमांश यज्ञ पूर्ण किया। इसी दौरान उनके जीवन में अद्भुद परिवर्तन आने लगा। संघ, संसार सब को भूल गए। मैंने एक बार कहा कि लोगों को उत्तरदायित्व सौंपों तो उनका कहना था कि जिन्होंने तनसिंह जी की बात को समझा है उन्हें सौंपने का आवश्यकता नहीं है। जिनको लगता है काम करना चाहिए। स्वयं शिविरों में आते थे, इच्छा होती तो बोलते थे अन्यथा नहीं बोलते लेकिन उनका जीवन प्रेरक बन गया।

30 जुलाई को संघ के तृतीय संघ प्रमुख नारायणसिंह जी रेड़ा की जयंती के अवसर पर केन्द्रीय कार्यालय संघ शक्ति में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि एक दिन एकांत में मैंने उनसे कहा कि मुझे लगता है कि तनसिंह जी तो जिंदा है और नारायणसिंह जी मर गए हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी बात फिर कभी मत कहना। उनके जीवित रहते मैंने यह बात किसी को नहीं कही लेकिन मेरी यह अनुभूति है कि उनका पूरा स्वभाव बदल गया था। उनकी कुंडलिनी जागृत हुई, विभिन्न चक्रों का भेदन हुआ, असहनीय कष्ट हुआ लेकिन वे आसानी से सहन करते रहे। उन्होंने कहा कि जो कुछ घट रहा है उसका मात्र 3 प्रतिशत ही मैं बता पा रहा हूं। शेष तो केवल अनुभव किया जा सकता है। उनका स्वभाव एक दम बदल गया, सब प्रकार की चाह मिट गई। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन की जो भी उपलब्धि है मैं उसे तनसिंह जी को भेंट करता हूं क्यों कि जोगमाया को मैं जानता नहीं हूं। उनके इस परिवर्तन ने उन्हें हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत बना दिया था। **मित्रवत थे, गुरु सम बन गए**। उनके जीवन की विशेषता 'समर्पण' ने उनके जीवन में यह सब घटित करवाया। हनुमानजी ने राम को समर्पण किया, उनकी आज्ञा मानी तो आप्त पुरुष बन गए। उसी प्रकार नारायणसिंह जी ने तनसिंह जी के प्रति समर्पण किया, उनकी आज्ञा मानी तो वे भी आप्त पुरुष बन गए। उनके सत्संग में साथियों का संघ कार्य के प्रति लगाव बढ़ता गया। संघ को एक धरोहर के रूप में तनसिंह जी ने नारायणसिंह जी को सौंपा। हमने उनकी आज्ञा का पालन किया, उनको गुरु मानकर उनका उपदेश सुना और महसूस किया कि आज्ञा पालन ही सबसे बड़ी सेवा है। यही बात विगत वर्षों में स्वामी अड़गड़ानंद जी के पास गया तो सुनने को मिली कि गुरु की आज्ञा पालन ही सबसे बड़ी सेवा है। तनसिंह जी का पूरा साहित्य अध्यात्म पर आधारित है और नारायणसिंह जी ने उस अध्यात्म को जीकर बताया। उनकी **'गीता और समाज सेवा'** पुस्तक समाज में काम करने वाले हर व्यक्ति को पढ़नी चाहिए। स्वामी जी के पास गया तो उन्होंने भी गीता ही पकड़ाई और उसको पढ़ने से संघ का मार्ग और अधिक स्पष्ट हो गया। भ्रमों का निवारण हो गया। परमेश्वर की प्रेरणा से तनसिंह जी ने गीता पर आधारित संघ मार्ग प्रदान किया और नारायण सिंह जी ने उनकी आज्ञा का पालन कर इस मार्ग में अध्यात्म को प्रकट कर दिया। गीता योग की कथा है, जीव और ब्रह्म के मिलन का वर्णन है। यह आदि ज्ञान है जो कालांतर में लोप हुआ। भगवान कहते है उस लोप हुए ज्ञान को ही मैं पुनः प्रकट कर रहा हूं। स्वामी जी हर बार पूछते हैं कि राजपूतों में कुछ बदलाव आया क्या, क्यों कि क्षत्रियों के बिना इस संसार का कोई कल्याण नहीं कर सकता। लेकिन जिन लोगों को अपना, राष्ट्र का व संपूर्ण विश्व का जीवन बनाना है वे सोये पड़े हैं। संयम के बिना जागृति संभव नहीं है। संघ संयम का मार्ग है। आत्मानुशासन व आत्म निमंत्रण का मार्ग है। संघ मन, बुद्धि, आत्मा, कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों को नियंत्रित करके अपने लिए नहीं संसार के लिए जीने का मार्ग बताता है। इसलिए मुझे श्री क्षत्रिय युवक संघ के अलावा राजपूत जाति के लिए कोई अन्य मार्ग दिखता नहीं है। इसलिए आपसे निवेदन है कि संघ को ढंग से समझें, गीता और समाज सेवा को ढंग से समझें, यथार्थ गीता को ढंग से समझें तो फिर संसार की सभी प्राप्तियां परमेश्वर की ओर बढ़ने में, अपना, राष्ट्र का व संसार का कल्याण करने में सहायक बन जाएंगी और यही संघ का मार्ग है। इसी में हमारा व संसार का कल्याण समाया है।

संघ प्रमुख श्री का नागौर, बीकानेर व जैसलमेर प्रवास

(पृष्ठ तीन से लगातार)

5 अगस्त को माननीय संघ प्रमुख श्री के सान्निध्य में बीकानेर शहर की शाखाओं की सामूहिक शाखा लगाई गई। 5 अगस्त को ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक दुर्गादास जी के आवास पर जाकर उनके पिताजी के देहांत पर संवेदना प्रकट की।

जैसलमेर प्रवास के दौरान आठ अगस्त को संभागीय कार्यालय में स्नेह मिलन रखा गया। माननीय संघप्रमुख श्री ने यहां कहा कि क्षत्रिय कभी संकुचित हो ही नहीं सकता यह उसके जीवन आधार का श्रेष्ठतम गुण हैं। हमारे जीवन में कभी संकुचितता रही ही नहीं सबको गले लगाकर उनकी हर पीड़ा में हमारा दर्द उभरे ऐसी श्रेष्ठता रही है इसलिए अन्यों ने हमारा अनुसरण किया। उन्होंने कहा कि गीता में हमारी प्रत्येक समस्याओं का निदान हैं। जब हम उसे बार बार पढ़ते हैं तो उसके अर्थ समझ में आते हैं। यह हमारे जीवन व्यवहार को बदलने में सहायक है।

उन्होंने कहा कि यह संघ आपका अपना ही है। आप सभी के सहयोग की आवश्यकता रहती है। कार्यक्रम में संघ के स्वंयसेवकों के अलावा जिले भर से विभिन्न संस्थाओं से जुड़े, विभिन्न पार्टियों के

पदाधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता व व्यवस्यायी उपस्थित रहे।

श्री जवाहिर राजपूत छात्रावास में संघ प्रमुख श्री के सान्निध्य में शाखा मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें जवाहिर शाखा, तनाश्रम शाखा, भटियाणी शाखा व वीर विक्रमादित्य शाखा के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। संघ प्रमुख श्री ने छात्रों को उनके जीवन की उपयोगिता के बारे में व अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर निरन्तर और नियमित रूप से अध्ययन करने और हर पल जाग्रत रहने को कहा। उन्होंने कहा कि समाज के इस भवन का आप पर कर्ज है। यहां आपको इतनी व्यवस्थाएं दी जाती हैं। इसे अपनी मां के समान मानें और सहयोग करें। जीवन व्यवहार को बदलने के लिए संयमित और अनुशाषित रहें। संघप्रमुख श्री ने छात्रावास की व्यवस्था देखने वाले लोगों की सराहना की व इसी प्रकार के सहयोग बनाए रखने को कहा। तनाश्रम में तीन दिवसीय प्रवास में संघ प्रमुख श्री ने प्रान्त प्रमुखों व स्वंयसेवकों से संघ कार्य की जानकारी ली व वर्तमान कार्य को किस प्रकार से बढ़ाया जाए इस पर चर्चा की। 9 अगस्त को प्रात 9 बजे ऊगम सिंह लूना द्वारा संचालित राणी रूपादे विद्यालय में संघ प्रमुख श्री के सान्निध्य में विद्यार्थी स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें विद्यालय के अध्यापक व छात्र उपस्थित रहे। तत्पश्चात संघ प्रमुख श्री ने बाड़मेर के लिए प्रस्थान किया।

अजमेर व जयपुर में तीजोत्सव

अजमेर

जयपुर

श्री राजपूत महिला सभा पंचशील नगर अजमेर द्वारा चाणक्य स्मारक पर तीजोत्सव कार्यक्रम का 3 अगस्त को आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में संघ की स्वयंसेविका रीता कंवर देवलिया ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के महिला विभाग एवं उसके कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रमों घूमर, नृत्य, फैशन शो, लहरिया प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया एवं प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाली महिलाओं को पुरस्कृत किया गया। सभी महिलाओं ने झूलों का आनंद लेकर कार्यक्रम का समापन किया। राजपूत सभा जयपुर में प्रतिवर्ष की भांति 31 जुलाई को तीज पूजा महोत्सव मनाया गया जिसमें सभा की कार्यकारिणी सदस्या हेमेन्द्र कुमारी दुदू व सुमन कंवर बाबरा के नेतृत्व में सभा से जुड़ी 150 महिलाओं ने भाग लिया। महोत्सव में पारंपरिक तीज पूजन के पश्चात सामूहिक गीत गायन, घूमर नृत्य आदि का आयोजन हुआ। सभा भवन के लॉन में पारंपरिक झूलों का भी आनंद लिया। परस्पर परिचय एवं विचार विमर्श के बाद कार्यक्रम संपन्न हुआ। जोधपुर में भी संघ के संभागीय कार्यालय में लगने वाली साप्ताहिक महिला शाखा में तीजोत्सव मनाया गया।

मारवाड़ राजपूत सभा की नवीन कार्यकारिणी गठित

मारवाड़ की सामाजिक संस्था मारवाड़ राजपूत सभा की त्रैवार्षिक कार्यकारिणी की चुनाव प्रक्रिया 29 जुलाई को संपन्न हुई। अध्यक्ष पद के लिए हनुमानसिंह खांगटा, महासचिव के रूप में विशनसिंह खिरजां, उपाध्यक्ष के लिए अर्जुनसिंह रुणकिया एवं कोषाध्यक्ष के लिए सुरेन्द्रसिंह केतु का निर्विरोध निर्वाचन संपन्न हुआ। 11 जिला प्रतिनिधि भी निर्विरोध निर्वाचित हुए वहीं 8 जिला प्रतिनिधि चुनाव में विजेता घोषित हुए। इसके अलावा नवलसिंह जोधा, नारायणसिंह महेचा, नरेन्द्रसिंह दधवाड़ा, विश्वनाथ प्रतापसिंह कूड़, सुरेन्द्रसिंह खींची, राजेन्द्रसिंह सिणली, विक्रमसिंह इन्दा, किशनसिंह भाटी, महिपालसिंह खींची, किशनसिंह तापू का केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में चुनाव संपन्न हुआ।

बालिकाओं व महिलाओं का स्नेहमिलन

गुजरात के महेसाणा प्रांत के वसाई गांव में 28 जुलाई को वसाई जगन्नाथपुरा, पीलवाई आदि गांवों की महिलाओं एवं बालिकाओं का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें गुजरात की महिला विभाग प्रभारी जागृति बा हरदासकाबास ने वर्तमान में संघ का एक बालिका एवं महिला के जीवन में क्या महत्व है, संघ क्या व कैसे कर रहा है, हमारा समाज अन्यों से कैसे भिन्न है, महिलाओं की संस्कृति व धरोहर बचाने में क्या भूमिका है आदि विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। जागृति बा ने शौर्य, संस्कार, संस्कृति एवं पवित्रता के बारे में विस्तार से बताया। उपस्थित बालिकाओं ने भी अपने विचार रखे एवं शंकाओं का समाधान किया। बालिकाओं एवं महिलाओं के साथ आए पुरुषों का अलग से कार्यक्रम रखा गया जिसमें पूज्य नारायणसिंह रेड़ा की जयंती मनाई गई।

परमवीर डिफेन्स एकेडमी
सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान
आर्मी नेवी
एयरफोर्स SSC-GD NDA/CDS
भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा
जोधपुर 9166119493

दूरस्थ शिक्षा केन्द्र सोलंकियातला, जिला जोधपुर
प्रवेश चालू सीधे 10वीं करें
● उम्र बंधन नहीं N.I.O.S. T.C. की जरूरत नहीं।
● कोई भी कक्षा फेल या पास किसी भी उम्र में
● बिना टी.सी., आधार कार्ड से सीधे 10वीं पास करें।
● 'A' ग्रेड यूनिवर्सिटी से पत्राचार द्वारा घर बैठे
● B.A., B.Com., M.A., योगा में M.A. अच्छे अंकों से पास करें।
● NIOS भारत सरकार का सबसे बड़ा सरकारी ओपन बोर्ड है।
आदर्श सीनियर सैकण्डरी स्कूल
सोलंकियातला तह. शेरगढ़, जिला-जोधपुर।
सांगसिंह राठौड़
प्रबंधक व समन्वयक
9783202923
8209091787

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष: 2466353 व 2466387) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org